बाल बलात्कार

आज इस जहाँ में
हर भगवान, हर इंसान से
शिकायत है मुझे
सिर्फ शिकायत ही नहीं
अफ़सोस और नफ़रत भी है मुझे
जानते हो क्यों
क्योंकि,
इस ख़ूबसूरत समाज के हर घर में
सुबह तो ख़ूबसूरत होती है, पर
शामें चीख़ों से भरी होती हैं
और रातें मासूमों की लाशों से
और फिर कुछ बचता है तो
सन्नाटा, नफ़रत,
मजबूरी, अफसोस और डर

डर सिर्फ अपनी प्यारी बेटी बचाने का नहीं,
बल्कि अपने छोटे बेटे, बूढ़ी माँ और पत्नी
डर अपने पूरे परिवार की "अस्मिता" बचाने का

जो हैवानियत समाज मे फैली है
जहाँ लड़की तो पूरी तरह असुरक्षित है
वही लड़के भी सुरक्षित नहीं
आज बलात्कार का दूसरा रूप
"बाल-बलात्कार" है

और अब जरूरत है
अपने देश के बचपन को बचाने की
देश की मासूमियत को बचाकर
समाज को सुरक्षित बनाने की
जरूरत है हर परिवार को
तेज आवाज उठाने की
और ये आवाज इतनी बुलंद होनी चाहिए
कि समाज बलात्कार मुक्त हो सके
ये कदम इतना कठोर होना चाहिए
कि फिर मोमबत्ती जलाने की जरूरत न पड़े
किसी को भीख मांगने की जरूरत ना पड़े
सिर्फ इतना कामयाब कदम
कि हमें अपने देश का बचपन दिखाई दे
बचपन का बलात्कार नहीं
और हमारी आंखों में
एक सुरक्षित माहौल हो
एक सकारात्मक समाज हो
और बच्चों का बेख़ौफ बचपन हो!

चंदा यादव
बी.ए. (ऑनर्स), राजनीतिक विज्ञान
शैक्षणिक सत्र : २०११-१४
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

भूल गयीं मैं मुस्कुराना

तुमने बचपन छीन लिया मेरा
बन गई खिलौना मैं तेरा
पड़ा मुझपे तेरा साया जब से
भूल गई मैं मुस्कुराना तब से
मेरे सपनों का महल तोड़ दिया तुमने
मेरी रूह तक को झकझोर दिया तुमने
मेरी पायल को तुमने बेड़ियों में बदल दिया
मेरी मेहंदी को तुमने लाल रंग से रंग दिया
मेरे आंसू देख मेरे मां-बाप भी रोते हैं
और इसलिए लोग लड़की को पैदा करने से
पहले हजार बार सोचते हैं
ऐ इंसान खुदा भी जब तुझे देखता होगा
कैसे बन गया तू हैवान वह भी सोचता होगा
लेकिन एक वक्त ऐसा भी आएगा
तू अपनी ही परछाई से मुंह छिपाएगा
जब आएगी वो तेरे घर
तब शायद तुझे समझ आएगा
जब पुकारेगी वो तुझे बाबा कहकर
तब तू अपनी गलती पर पछता भी ना पाएगा

प्रेरणा राठी
एम.ए.-मनोविज्ञान
अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली।